नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पेयजल संकट से निपटने की तैयारियां युद्ध स्तर पर हों

देश में हर वर्ष गर्मी के साथ जल संकट की चर्चा तेज हो जाती है, लेकिन इस बार हालात और गंभीर होने की आशंका जताई जा रही है. मौसम विभाग का अनुमान है कि इस वर्ष देश के अधिकांश हिस्सों में सामान्य से अधिक गर्मी पड़ेगी. वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम का स्वभाव तेजी से बदल रहा है. इसका सीधा असर वर्षा के पैटर्न और जल संसाधनों पर पड़ रहा है. ऐसे में पेयजल संकट केवल पर्यावरण या मौसम का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक चुनौती बन चुका है.

भारत को प्रकृति ने जल के मामले में कंजूस नहीं बनाया है. औसतन हर वर्ष लगभग 110 सेंटीमीटर वर्षा से देश को करीब 4000 घन किलोमीटर पानी प्राप्त होता है, जो दुनिया के कई देशों की तुलना में कहीं अधिक है. इसके बावजूद विडंबना यह है कि इस जल का मात्र 15 प्रतिशत ही संचित हो पाता है, जबकि शेष 85 प्रतिशत पानी नालों और नदियों के माध्यम से समुद्र में चला जाता है. स्पष्ट है कि समस्या पानी की कमी से अधिक उसके प्रबंधन की है. भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 32.80 लाख वर्ग किलोमीटर है और लगभग पूरा क्षेत्र किसी न किसी नदी के जलग्रहण क्षेत्र में आता है. हर वर्ष भारतीय नदियों के माध्यम से करीब 1645 घन किलोमीटर पानी बहता है, जो दुनिया की नदियों के कुल प्रवाह का लगभग 4.4 प्रतिशत है. लेकिन बड़ी चुनौती यह है कि यह जल वर्ष के कुछ महीनों में ही उपलब्ध रहता है. उत्तर भारत में लगभग 80 प्रतिशत और दक्षिण भारत में करीब 90 प्रतिशत नदी जल जून से सितंबर के बीच ही मिलता है. शेष आठ महीनों में जल की उपलब्धता काफी सीमित हो जाती है.

यही कारण है कि देश के 13 राज्यों के 135 जिलों में लगभग दो करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि पर हर दस वर्षों में चार बार गंभीर जल संकट खड़ा हो जाता है. यदि वर्षा औसत से थोड़ी भी कम हो जाए तो स्थिति और विकराल हो जाती है. दरअसल, हमने अपनी पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियों को लगभग भुला दिया है. कभी गांव-गांव में तालाब, कुएं, बावड़ियां और छोटी नदियां वर्ष भर जल का स्रोत हुआ करती थीं. ये जल संरचनाएं वर्षा के पानी को संचित कर पूरे वर्ष जीवन को सहारा देती थीं. आज इनका बड़ा हिस्सा या तो समाप्त हो चुका है या फिर गंदे पानी के निस्तारण का साधन बन गया है. कृषि पद्धति में भी बदलाव ने संकट को बढ़ाया है. कम पानी में उगने वाले मोटे अनाज, ज्वार, बाजरा और कुटकी की खेती लगातार घटती गई है, जबकि अधिक पानी मांगने वाली नकदी फसलों जैसे सोयाबीन और अन्य फसलों का विस्तार हुआ है. इससे खेती की निर्भरता वर्षा पर और बढ़ गई है.

जल संकट के समाधान के लिए सबसे पहले जल संरक्षण को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना होगा. वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाने, पारंपरिक जल स्रोतों के पुनर्जीवन और नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को सुरक्षित रखने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे. अवैध रेत खनन, नदियों में कचरा और मलबा डालने जैसी गतिविधियों पर कठोर नियंत्रण जरूरी है. साथ ही समाज को भी अपनी जल उपयोग की आदतों में बदलाव लाना होगा. कभी जब कुओं से रस्सी डालकर पानी निकाला जाता था, तब लोग उतना ही जल उपयोग करते थे जितनी आवश्यकता होती थी. आज ट्यूबवेल और बोरवेल ने पानी को सहज उपलब्ध तो बना दिया है, लेकिन इसके अंधाधुंध दोहन ने भूजल स्तर को खतरनाक स्थिति में पहुंचा दिया है.

स्पष्ट है कि यदि समय रहते ठोस और सामूहिक प्रयास नहीं किए गए तो आने वाले वर्षों में जल संकट और गंभीर रूप ले सकता है. इसलिए सरकार, प्रशासन और समाज, सभी को मिलकर पेयजल संकट से निपटने के लिए युद्ध स्तर पर तैयारियां करनी होंगी. जल संरक्षण ही भविष्य की सबसे बड़ी सुरक्षा है.

स्वास्थ्य देखभाल में अग्रणी भूमिका निभा रहा योग

प्रतापराव जाधव

> योग को दैनिक जीवन में शामिल करके, हम केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को ही मजबूत नहीं करते, बल्कि सामूहिक कल्याण, संगठनात्मक दक्षता और सामाजिक समरसताको भी बढ़ावा देते हैं. आज, अनुसंधान, प्रौद्योगिकी और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से, भारत योग कीअनंत ज्ञान परंपरा को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित और सार्वभौमिक रूप से सुलभ मार्ग में बदलने का अगला निर्णायक कदमउठा रहा है, जो वैश्विक स्वास्थ्य, संतुलन और कल्याण के लिए मार्ग दर्शक बन सकेगा.

बीते दशक में योग को केवल पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धति के रूप में ही नहीं सराहा गया, बल्कि उसे उत्तीरोत्तकर रूप से स्वास्थ्य और कल्याण के लिए साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण के रूप में भी पहचाना जाने लगा है. वैज्ञानिक अनुसंधान, डिजिटल नवाचार और वैश्विक सहयोग अब हमें योग को केवल भारत की सांस्कृतिक विरासत हीनहीं, बल्कि एक सशक्तल जन-स्वास्थ्य हस्तक्षेप समझने में भी मदद कर रहे हैं.

मोरारजी देसाई राष्ट्रीनय योग संस्थातन (एमडीएनआईवाई) को पारंपरिक चिकित्सा (योग) के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोगी केंद्र के रूप में नामित किया गया है और योग अनुसंधान में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका और भी मज़बूती प्रदान करते हुए वर्ष 2025-2029 के लिए इसे फिर से निमित किया गया है. यह पहचान गैर-संचारी रोग (एनसीडी) के लिए साक्ष्य-आधारित योग हस्तरक्षेपों को बढ़ावा देने में संस्था न की बढ़ती भूमिका को दिखाती है. इस पहल के प्रमुख साझेदारों में आयुष मंत्रालय, एम्सत दिल्ली, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद, और इंस्टीट्यूट ऑफ़ न्यूक्लियर मेडिसिन एंड एलाइड साइंसेज, दिल्ली शामिल हैं. इन सहयोगों के माध्यम से केंद्र मधुमेह, मोटापा और तनाव से संबंधित विकारों जैसे गैर-संचारी रोगों के लिए योग-आधारित हस्तक्षेपों परतकनीकी दिशा निर्देश विकसित कर रहा है और अनुसंधान को आगे बढ़ा रहा है. इन प्रयासों में अंतरराष्ट्रीय संगठन भी साझेदारी कर रहे हैं, जिससे योग की वैज्ञानिक आधारशिला और मजबूत हो रही है तथा निवारक स्वास्थ्य देखभाल के लिए व्यापक रूप से लागू किए जा सकने वाले, किफायती और साक्ष्य-समर्थित प्रभावी साधनके तौर पर योगकी क्षमताप्रदर्शित हो रही है.

संस्थागत स्तर परएमडीएनआईवाई योग की वैज्ञानिक आधारशिला को मजबूती प्रदान करना जारी रखे हुए है. शरीर क्रिया विज्ञान, जैव रसायन, बायोमैकेनिक्स और मनोविज्ञान की अनुसंधान प्रयोगशालाओं के माध्यम से यह संस्थान योग केमनो-शारीरिक और जैव-रासायनिक प्रभावों, उम्र बढ़ने में इसकी भूमिका तथा जीवनशैली से जुड़े विकारों पर इसके प्रभाव का अध्ययन करता है. यह कार्य पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ जोड़ने की दिशा में भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने योग की पहुँच को और अधिक बढ़ाया है, जिससे साक्ष्य-आधारित पद्धतियाँ सीधे लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा बन रही हैं. एम-योगा मोबाइल एप्लिकेशन और वाई- ब्रेक प्रोटोकॉल जैसे प्रयास यह दिखाते हैं कि योग की प्रामाणिकता और चिकित्सकीय महत्वि बनाए रखते हुए उसे बड़े स्तर पर पहुँचाया जा सकता है. विश्वं स्वास्थ्यि संगठन के सहयोग से विकसित किए गएएम -योगा प्लेटफॉर्मपर1.1 लाख से अधिक डाउनलोडदर्ज किए जा चुके हैं, जो सुलभ डिजिटल वेलनेस टूल्स में बढ़ती रुचि को दर्शाता है. वहीं कार्यस्थल योग कार्यक्रम वाई- ब्रेक जो काम के दौरान 5-10 मिनट का सरल योग ब्रेक है — से अब तक 33 लाख से अधिक सरकारी अधिकारियों को लाभ मिल चुका है. इन पहलों से प्राप्त अनुसंधान निष्कर्ष और सहभागिता विश्लेषण अत्यंत उत्सा जनक हैं. वाई ब्रेक अभ्यास से कुछ ही सप्ताहों में अनुभूत तनाव में लगभग 40 प्रतिशत तक कमी देखी गई है. अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि इससे मानसिक सतर्कता, भावनात्मक दृढ़ता और निर्णय-क्षमता में सुधार होता है. इसके साथ-साथ कॉर्टिसोल स्तरजैसे शारीरिक संकेतकों में भी सकारात्मक परिवर्तन पाए गए हैं. शारीरिक लाभों मेंगर्दन, कंधे और कमर के दर्द में कमी, श्वास अभ्यास से सांस लेने की क्षमता में सुधार और संपूर्ण जीवन शक्ति में वृद्धि शामिल हैं—ये परिणाम विशेषकर आज केनिष्क्रिय, स्क्रीन-आधारित कार्यस्थलों में प्रासंगिक हैं. अभ्यास ने अनुपस्थिति में कमी लाने, कर्मचारियों के मनोबल में सुधार लाने, और कार्य-जीवन में स्वस्थ संतुलन कायम करने में भी योगदान दिया है, जो व्यक्तिगत और संगठनात्मक कल्याण दोनों को मजबूत बनाने की योग की क्षमता को दर्शाता है.

एमडीएन आई वाई और केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन-2026 के दौरान भी वैज्ञानिक प्रमाण के महत्व परजोर दिया गया. विशेषज्ञों ने यह रेखांकित किया किसुदृढ़ अनुसंधान, अंतरविषयक सहयोग, और प्रभावी डिजिटल सहभागिता आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में योग को एकीकृत करने और स्पिष्ट और स्वास्थ्य परिणाम सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य हैं.

(लेखक केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के राज्य मंत्री हैं.)

प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में कदम

महाराष्ट्र सरकार ने वायु प्रदूषण की गंभीर समस्या को देखते हुए ऑटोरिक्शा को नए लाइसेंस जारी नहीं करने तथा गैरकानूनी ढंग से चल रही बाइक टैक्सी सेवा पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया है. यह फैसला स्वच्छ ईंधन की दिशा में उठाया गया एक कदम बताया जा रहा है. नियमित देखरेख न करने से ऑटो से निकलने वाला काला धुआं व कार्बन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है. पिछले 1 दशक में ऑटोरिक्शा की तादाद काफी बढ़ गई है. बैटरी से चलने वाले ऑटो निकले हैं लेकिन उनकी गति धीमी होने तथा शॉक एब्जार्बर नहीं होने से लोग उन्हें पसंद नहीं करते. एक पहलू यह भी है कि नौकरी नहीं मिलने से कई बेरोजगार युवा ऑटोचालक बन गए हैं. यह आसानी से उपलब्ध होने वाला शहरी यातायात साधन है. बस के लिए इंतजार करने की बजाय लोग ऑटो शेयर करना पसंद करते हैं. मेट्रो से उतरने के बाद भी घर तक पहुंचने के लिए ऑटो की जरूरत पड़ती है. सरकार को यह भी देखना चाहिए कि किसी के रोजगार पर आंच न आए. इस समय चल रहे ऑटो को बीएस-6 में रूपांतरित करने या ई-ऑटो को प्रोत्साहन देने की जरूरत है. महाराष्ट्र सरकार की ईवी नीति के अनुसार राज्य के सार्वजनिक वाहनों को ई-वाहनों में बदलने का उद्देश्य है. यदि सरकार पेट्रोल से चलने वाले ऑटोरिक्शा का विकल्प देना चाहती है तो जगह-जगह चार्जिंग स्टेशन बनाने होंगे तथा बैटरी स्वीपिंग सुविधा बढ़ानी होगी. अभी जरूरत के मुताबिक बसें नहीं हैं और वह समय पर छूटती भी नहीं इसलिए ऑटोरिक्शा का प्रचलन बढ़ गया है. मुंबई व पुणे में ऑटोरिक्शा मीटर से चलता है. नागपुर में मीटर सिस्टम लागू करने में सफलता नहीं मिल पाई. इसके अलावा प्रदूषण नियंत्रण करना है तो सभी गाड़ियों का पीयूसी अनिवार्य किया जाना चाहिए. एक सवाल यह भी पूछा जाता है कि जब कुछ साल चलकर बैटरी खत्म हो जाएगी तो उसका निपटान कैसे होगा? क्या उससे प्रदूषण नहीं फैलेगा?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

महाकौशल की डायरी

उत्साह में लांघी मर्यादा, अब हो रही तीखी निंदा

अविनाश दीक्षित

भारतीय टीम के टी 20 वर्ल्ड कप जीतने की खुशी के जश्न, उत्साह के बीच शहर के युवा मर्यादा, संस्कारों और गरिमा को तोड़ते नजर आए. हुआ यूं कि खुशी का इजहार करते करते युवा वर्ग मालवीय चौक स्थित ख्यात शिक्षाविद व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर जूते पहनकर चढ़ गए और उत्पात मचाते रहे. इसी बीच किसी प्रबुद्धजन ने युवाओं के उत्पात का वीडियो बनाया और सोशल मीडिया में अपलोड कर दिया जिसके बाद शहर के प्रबुद्धजनों ने युवाओं की इस करतूत का तीखा विरोध किया है. खबर है कि जिन युवाओं ने ये करतूत की है उनसे से कोई युवक कांग्रेस से तो कोई एबीवीपी से जुड़ा हुआ है.

विदित हो कि भारत के वर्ल्ड कप जीतने के बाद मालवीय चौक पर युवाओं का बड़ा हुजूम एकत्रित हुआ था जिस दौरान सभी ने अपने-अपने अंदाज में खुशी जाहिर करते हुए जश्न मनाया लेकिन इस जश्न के बीच युवा मर्यादा करना भूल गए जिसकी अब शहर में तीखी निंदा हो रही है. लोग सवाल यह भी उठा रहे हैं कि उक्त वीडियो वायरल हुए कई दिन बीत गये हैं मगर जिला अथवा पुलिस प्रशासन के कर्ताधर्ता अधिकारियों को अब तक यह वीडियो नजर क्यों नहीं आया है ?

आदेश ने शिक्षकों के खेमे में मचाया भूचाल....

लोक शिक्षण संचालनालय के नए फरमान ने जबलपुर के ऐसे सरकारी शिक्षकों के खेमे में भूचाल ला दिया है जो कि स्कूलों में सिर्फ रस्मअदायगी के लिए बच्चों को पढ़ाने जाते थे और सरकार से मोटी रकम बतौर पगार लेते रहे हैं. प्रदेश के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को लोक शिक्षण संचालनालय के फरमान में स्पष्ट कहा गया है कि शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने से पहले शिक्षकों को शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) देनी होगी और इस परीक्षा में पास होना पड़ेगा, 2 साल की समय सीमा के बीच में जो शिक्षक ये परीक्षा पास नहीं कर पाएगा उसकी सेवा समाप्त कर दी जाएगी. विभाग के आदेश को जिला शिक्षा अधिकारी ने शिक्षकों को सर्कुलेट किया तो विरोध के स्वर तेज उठने लगे. खबर है कि जिन शिक्षकों की सेवानिवृत्ति में 5 साल से ज्यादा समय बचा है, उन्हें भी अनिवार्य रूप से परीक्षा देनी होगी. विभाग जुलाई-अगस्त 2026 में विशेष टीईटी कराने की तैयारी कर रहा हैऔर इसके लिए ऐसे शिक्षकों का डेटा जुटाया जाने लगा है. विदित हो कि सुप्रीम कोर्ट के हालिया फैसले के आधार पर विभाग ने सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिए हैं.

डॉक्टर के इस्तीफे की गूंज मंत्रियों तक पहुंची....

करीब 8 माह से वेतन नहीं मिलने और सीएमएचओ कार्यालय के चक्कर काट- काटकर थक चुके कटनी जिले के बड़वारा सामुदायिक केंद्र के मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर नीरज विश्वकर्मा के इस्तीफे ने ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य विभाग की कार्यशैली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं. डॉक्टर के इस्तीफे के बाद जहां स्थानीय चिकित्सा क्षेत्र में हड़कंप मच गया तो वहीं दूसरी तरफ शिकायत भोपाल तक मंत्रियों के खेमे में जा पहुंची. बावजूद इसके अभी तक डॉक्टर को वेतन संबंधी कोई राहत नहीं मिली है. नियमों की बात करें तो करीब 1 लाख आबादी वाले बड़वारा सामुदायिक केंद्र में चार एमबीबीएस और तीन विशेषज्ञ डॉक्टरों के पद स्वीकृत हैं, जो पहले से ही कई वर्षों से खाली पड़े हैं. वर्तमान में यहां केवल दो बंध पत्र चिकित्सक कार्यरत थे. डॉ. नीरज विश्वकर्मा के इस्तीफे के बाद अब मात्र एक डॉक्टर के कंधों पर पूरे अस्पताल का बोझ आ गया है. जिसको लेकर स्थानीय लोग भी चिंता जाहिर कर ये कहते हुए नजर आ रहे हैं कि यदि अब बचे एक मात्र डॉक्टर भी अनुपस्थित रहे तो मरीजों को इलाज के लिए तरसना पड़ेगा. कटनी व बड़वारा के आसपास चर्चाएं जोरों पर हैं कि बड़वारा सामुदायिक केंद्र के मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर नीरज विश्वकर्मा का 8 माह का वेतन जिला स्तर पर रोका गया है. कारण अभी सामने नहीं आ सका है कि वेतन किस वजह से रोका गया है. डॉक्टर विश्वकर्मा की मानें तो प्रतिदिन सामुदायिक केंद्र में ड्यूटी देने के बाद भी उन्हें अगर ये दिन देखना पड़ रहे हैं तो ये सिस्टम पर बहुत बड़ा सवाल है.

निशानेबाज

कैबरे गीत में दैवीय अनुभूति श्रेया घोषाल की मारी गई मति

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, बड़े गुलाम अली खां ने एक बार कहा था कि लता के गले में खुदा बसता है. अब गायिका श्रेया घोषाल ने कहा कि लता मंगेशकर ने कैबरे सॉन्ग गाया तो उसमें बहुत कुछ दैवीय भावना व्याप्त थी. आपकी इस बारे में क्या राय है?'

हमने कहा, 'यह अपनी-अपनी अनुभूति या नजरिया है. इसे आप तभी समझेंगे जब सूफी संतों के समान गहराई में जाकर विचार करें. श्रेया घोषाल ने 1969 में आई फिल्म 'इंतकाम' के मशहूर कैबरे गीत 'आ जाने जां, मेरा ये हुस्न जवां' का उल्लेख किया जिस पर जोरदार ऑर्केस्ट्रा के साथ हेलन ने फड़कदार डान्स किया था. इस सीन में पिंजरे के भीतर आजाद नामक पहलवान कैद रहता है और बाहर हेलन नाचती है. इस उत्तेजक और मादक कैबरे गीत को राजेंद्र कृष्ण ने लिखा था और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने संगीत से सजाया था. इसी कैबरे की

वजह से साधना और संजय खान की फिल्म 'इंतकाम' खूब चली थी. हिंदी फिल्मों में पहले कुक्कू का डान्स मशहूर था फिर हेलन ने उनका स्थान लिया. हेलन बर्मा (म्यांमार) से आकर बॉलीवुड फिल्मों में डांसर रहीं. वह अभिनेता सलमान खान की सौतेली मां है तथा संवाद व पटकथा लेखक सलीम खान की दूसरी बीवी हैं. अब उनकी उम्र लगभग 88 साल है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज हमें आश्चर्य है कि इस कामुकतापूर्ण कैबरे सॉन्ग की श्रेया घोषाल ने इतनी तारीफ क्यों की? लता मंगेशकर के और भी तो सुंदर-सुंदर गीत हैं.'

हमने कहा, 'श्रेया की टिप्पणी है कि हालांकि यह वासना भड़काने वाला नाइट क्लब स्टाइल का गीत है लेकिन इसमें भी इतना अपनापन और प्यार हो सकता है. लता मंगेशकर की आवाज कालजयी है व हर पीढ़ी में लोकप्रिय है.'

हमने कहा, 'यदि श्रेया घोषाल को कैबरे गीत में भजन जैसी भक्ति भावना नजर आती है तो उनकी मर्जी. वह तो आशा भोसले के गीत 'दम मारो दम, बोलो सुबह-शाम हरे कृष्णा हरे राम' में भी दैवीय अनुभूति महसूस कर सकती हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12196 - डॉ. सागर खादीवाला

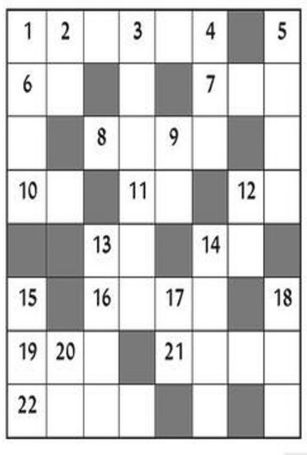

सादा दिख पड़ने वाला परंतु कपटी 4. पैगंबर, ईश्वर का दूत (उर्दू) 5. गर्भ के सातवें मास में उत्पन्न होने वाला शिशु 9. रास्ता, पथ 12. वह पात्र जिससे पेय पदार्थ पिया जाए 13. नश्वर, नाश को प्राप्त होने वाला 14. एक वृक्ष जिसकी छाल पर प्राचीन काल में ग्रंथ लिखे जाते थे 15. पांचवां, सात स्वरों में पांचवां स्वर 17. पदार्थ का वह गुण जिसका ज्ञान केवल आंखों द्वारा ही होता है 18. थरथराहट, कांपना 20. कथन, कहना, उपदेश

बाएं से दाएं
1. बसंत ऋतु (उर्दू) 6. जनाना जूता 7. रूप, आकृति, उपाय (उर्दू) 8. बहुत संपन्न 10. भीगा हुआ, आर्द्र 11. शिव, महादेव 12. तृषित, जिसे प्यास लगी हो 13. मनुष्याकृति पातालवासी सर्प जिसकी गणना देवयोनि में होती है 14. सीधा-सादा, सरल 16. एक प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर बत्तीस गोटों से खेला जाता है 19. एक पक्षी, सुर्खाब 21. इधर-उधर की बात 22. बड़प्पन, महत्ता

ऊपर से नीचे
1. उपस्थिति, हाजिरी (उर्दू) 2. पति के शव के साथ जल जाने वाली 3.

Solution 12195

म	रि	य	म	■	चा	त	क
फ	स	ल	■	त	बी	य	त
ल	■	गा	य	क	■	■	रा
र	फ्ता	र	■	रा	ह	त	■
■	■	■	प	र	वा	ह	■
न	सी	ह	त	■	■	ल	घु
ग	धा	■	वा	ह	■	का	ल
द	■	ह	र	क	त	■	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नई योजनाओं का शुभारंभ होगा, सांसारिक सुखों की वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा, व्यापार व्यवसाय में सुधार होगा, वर्ष के मध्य में पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा, व्यापार में सुधार होगा, वर्ष के अन्त में उतावलीपन में लिये गये निर्णय से हानि होगी, शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, अत्याधिक परिश्रम से मन व्यथित रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम सें मन दुखी होगा, कर्क और सिंह राशि केव्यक्तियों को उतावलेपन में लिये गये निर्णय में सुधार होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को कार्यो में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक जीवन में सफलता मिलेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों कोसावधानी पूर्वक कार्यो में लगना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक लगनशील स्वाभिमानी तथा सुन्दर कर्मठ, दूसरों के प्रति सहृदयता एवं उदारता से व्यवहार करेगा. स्पष्टवादी होगा. अपने कार्यो को सहर्ष स्वयं करेगा. इसके मित्रों की संख्या सीमित होगी. यात्रा और मनोरंजन का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

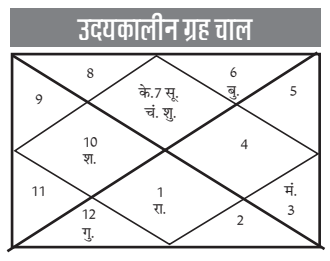

पंचांग

रा.मि. 22 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण दशमीं भृगुवासरे रातअंत 5/49, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे रात 1/4, व्यतिपात योगे दिन 8/54, वणिज करणे सू.उ. 6/6, सू.अ. 5/54, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण दशमीं को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से वनस्पति तेल, सरसों, अरंडी, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. गेहूँ, सोना, चांदी, के भाव में सामान्य स्थिति रहेगी. सोना, चांदी लोहा के भाव में उतार चढाव आयेगा. भाग्यांक 1507 है.

मेष- व्यवसायिक मामलों में जोखिम से बचने का प्रयास करें. रक्त विकार या नेत्र पीड़ा हो सकती है. विवादित मामलों को न बढ़ायें. सुख रहेगा.

वृषभ- जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. अनचाही यात्रा से बचें. उठाईगीरों से सावधान रहें. आपके कार्यो में परिश्रम अधिक करना होगा.

मिथुन- कुछ मानसिक तनाव रह सकता है. व्यर्थ के वाद विवाद से बचें. मन मुताबिक प्रस्ताव प्राप्त होने से मानसिक प्रसन्नता का योग प्रबल है.

कर्क- लंबी दूरी की यात्रा का योग है. किसी नवीन योजनाओं का विचार गंभीरता से होगा. व्ययभार अधिक होगा. लाभ सामान्य रहेगा.

सिंह- आर्थिक मामलों में प्रगति होगी. संयम से कार्य करना हितकर रहेगा. पारिवारिक कार्यो में संलग्नता रहेगी. अतिथि आगमन का योग है.

कन्या- पुराने आर्थिक मामलों में प्रगति होगी. धैर्य से कार्य करें. मैत्री संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. सामान्य प्रतिष्ठा वृद्धि होगी. शुभ सूचना मिलेगी.

तुला- रोजगार की तरफ प्रयास करें, सफलता मिलेगी. पारिवारिक में उत्साह बना रहेगा. अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें. उपहार मिलेगा.

वृश्चिक- रचनात्मक प्रयास सार्थक होगा. मांगलिक कार्यो पर अंतिम विचार होगा. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. पद प्रतिष्ठा बनी रहेगी.

धनु- पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. कामकाज की अधिकता रहेगी. परिजनों का सहयोग रहेगा. निजी कामकाज बनने का योग प्रबल है.

मकर- कोई ऐसा कार्य बनेगा, जिससे आपको संतोष रहेगा. महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी. मान प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होगा.

कुम्भ- मनोरंजन तथा धार्मिक स्थल की सैर होगी. किसी अभिन्न मित्र से भेंट होगी.मांगलिक कार्यो पर विचार होगा. सामाजिक कार्यो में वृद्धि होने का योग प्रबल है.

मीन- स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. खानपान पर नियंत्रण रखकर कार्य करें. मधुरता और साहसिक कार्यो में वृद्धि होगी. नियमितता बनी रहेगी.

SUDOKU 7328

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7327

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7